शिक्षा की नई चुनौतियाँ

पढ़ाई हमारे जीवन के एक महत्वपूर्ण कार्य है। हम सबको पढ़ाई लेना जरूर चाहिए। हमारे समाज के कई गरीब लोग अभी भी शिक्षा यानी पढ़ना चाहते है। लेकिन उनके पास पढ़ने के लिए पैसा नहीं है। शिक्षा की एक बड़ी चुनौति है पैसा। हमारे समाज ऐसे बन गए है कि पैसेवालों को ही अच्छी पढ़ाई मिलते है। लेकिन ऐसे नहीं होने चाहिए। पढ़ाई है तो हमें इस समाज में मूल्य होते है। हमें पढ़ाई नहीं है तो इस दुनिया में कोई मूल्य नहीं होते।

आजकल शिक्षा के लिए हमारे सामने नई चुनौतियाँ है। कई सामाजिक लोग कहते है कि हम बड़े हो जाते अथवा बुढ़ापे बन गए तो हमें पढ नहीं सकते। शिक्षा की एक चुनौति है हमारा उम्र।

पढ़ने के लिए हमारा उम्र एक समस्या ही नहीं है। हमारे इस जीवन ही एक पाठभाग है। हम इस जीवन रूपी किताब पढ़ रहे है। हमारे मन में पढ़ने की एक चिंता है तो हम पढ़ सकते है। पढ़ने में कोई शर्म नहीं चाहिए। हमें पढ़ने का अवसर मिला है तो हम उसे अच्छी तरह से उपयोग करना है। हम हमारे समाज में आँख खोलकर देखते है तो हमें समझ सकते है कि कितने लोग शिक्षा लेने केलिए मेहनत कर रहे हैं।

पुराने जमाने में लड़कियों को अच्छी तरह पढ़ाई नहीं दिया जाता है। लेकिन आज के समाज में स्त्री और पुरुष की कोई भेदभाव नहीं है। तब भी शहर जैसी जगहों में अभी - अभी - इस तरह की भेदभाव है।

जाति अभी - भी शिक्षा यानी पढ़ाई के लिए एक बड़ा समस्या है। यह भी शिक्षा

के लिए बड़ी चुनौती है। बच्चें कितनी अच्छी तरह से पढ़ते है फिर भी वे लोग ऐंक लिस्ट में नहीं आते है। यह आज के समाज के लोगों केलिए एक चुनौती है। जाति के भेदभाव से हमें काम नहीं करना चाहिए। हमको अपने टैलन्ट पर मिलने वाली काम करनी है नहीं तो वह काम नहीं है। हम अश्रान्त मेहनत करके ऐंक लिस्ट में आकर, अंत में सरकार जाति और वर्ण के नाम काम दिया है तो वह बहुत बुरी बात है।

अब्दुल कलाम ने ऐसे कहा है कि 'हम सोते समय देखने वाली स्वप्न वास्तव में स्वप्न नहीं है, हम आँख खुलकर वाली सुबह देखनेवाली स्वप्न है'। मतलब यह है हमारे सामने बहुत अधिक समस्याओं और चुनौतियाँ होते है। लेकिन उन सबको हम अपने सशक्त मन से सामना करनी है।

आज के जमाने में भी ऐसे है कि पैसे वालों को अच्छी पढ़ाई मिलते है। उन लोगों के बच्चों को टैलन्ट भी नहीं होते फिर भी उनको शिक्षा मिलते है। इस अवसर पर सादु लोग क्या कर सकते है। उन लोगों के वर्षो से बने गए स्वप्न वे धनें लोग के बच्चे तोड़ते है। शिक्षा की दूसरी चुनौती है महंगाई। आज कल पढ़ाई के लिए पैसों की आवश्यकता बहुत है। इसलिए हमें कह सकते है कि आज के पढ़ाई यानी पाठशाला पैसे केलिए शुरुआत की गई है। आज के बच्चें विदेश जाकर पढ़ाई करते है। प्रवास जाकर विदेशों को पैसे देते है। हमारे समाज में अथवा भारत में पढ़ाई करनेवालों की कमी भी होते है और पैसों की कमी भी होते है। पैसे नहीं होने के कारण कई लोग शिक्षा को एक अभिशाप मानती है।

हर व्यक्ति में पढ़ने की इच्छा है। लेकिन उनके घर की गरीबी की हालत के कारण पढ़ने की इच्छा वे उपेक्षित करते है। शिक्षा की प्रधान चुनौती है पैसा और उम्र। हम आजकल समाचार पत्र में एक रपट वाचन किया है कि एक बुढ़ापे ने उसकी डिग्रि की पढ़ाई खतम करके प्रथम पुरस्कार भी मिला गए थे। हमारे समाज के लोगों को यह एक मोटिवेशन है। वास्तव में उम्र हमें कोई समस्या नहीं है। हमारे मन में ताकत और आत्मविश्वास है तो हमें पढ़कर प्रथम पुरस्कार भी मिलते है। हम मेहनत करने केलिए तैयार है तो हमें कोई चुनौतियाँ भी सामना कर सकते है।

आज के समाज में पढ़ाई केलिए बहुत अधिक ऑपक्षणस है। उसे सही तरह से उपयोग करें तो हमें कोई बात में डरना नहीं है। गरीबों केलिए शिक्षा एक

बड़ी समस्या और चुनौती है। बसों के कमी के कारण भी कई लोगों को अच्छी तरह पढ़ाई नहीं कर सकते हैं। शहर द्वारा बसों के कमी के कारण कई बच्चों को अपने पाठशाला आ नहीं सकते। बीमारियाँ जैसी कोविड के दूसरे वेव के कारण भी कई देशों में शिक्षा बिगड़ जाती है। शिक्षा हमारे जीवन स्तर की एक प्रधान कार्य है। शिक्षा नहीं तो हम नहीं, इस समाज नहीं। पढ़ाई लेने से हमें नहीं जानते कार्य भी हमें पहचानते सकते है। जाननां शब्द की अर्थ है कि एक व्यक्ति की हताशा, निराशा, दुख, संकट आदि है। एक व्यक्ति के नाम, पता, उम्र, जाति जानने को नहीं जोड़ते है। आज के लोग यह सत्य जानना है।

पढ़ाई एक पैसे कमाने वाला कार्य नहीं है। पढ़ाई से इस समाज की उन्नति

बढ़ाते है। हमारे अंतिम स्वास तक पढ़ाई कर सकते है। हरेक दिन हम कुछ न कुछ जानते या पढ़ते है। पढ़ने की अवसर केलिए लड़ना एक बुरा बात नहीं है। यह युग शिक्षा की युग है। वशिक्षा है तो हमारे देश की विकसित होते है। 'पढ़ाई ही लड़ाई'। चुनौतियाँ को सामना करो। चुनौतियाँ मुक्त समाज केलिए एकसाथ मेहनत करो।

x x